सत्याग्रह
Satagraha

सत्याग्रह की पद्धति गाँधीजी की राजनीति को विशेष एवं अपूर्व देन है। स्वयं गाँधीजी के शब्दों में, "अपने विरोधियों को दुःखी बनाने की बजाय स्वयं अपने पर दुःख डालकर सत्य की विजय प्राप्त करना ही सत्याग्रह है।" "Satyagraha is a vindication of truth by learning witness to it through self suffering, in other word, love."

सत्याग्रह राजनीतिक अस्त्रों के शस्त्रागार में गांधीजी द्वारा प्रवर्तन किया गया एक अद्भुत अस्त्र था तथा क्रांति की एक नवीन पद्धति थी। यह एक नवीन विज्ञान तथा कर्म दर्शन का एक नया रूप है।

सत्याग्रह दो शब्दों के योग से बना है "सत्य" और "आग्रह"। अतः इसका शाब्दिक अर्थ है- "सत्य से चिपके रहना" अथवा "सत्य को धारण किए रहना"। गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह आत्म-शक्ति अथवा प्रेमशक्ति का एक ऐसा सिक्का है जिसके एक ओर 'सत्य' लिखा है तो दूसरी ओर 'प्रेम'।

'सत्याग्रह' सत्य की विजय हेतु किए जाने वाले आध्यात्मिक और नैतिक संघर्ष का नाम है। सत्याग्रह शक्तिशाली और वीर मनुष्यों का अस्त्र है। यह शरीर से कमजोर मगर नैतिक रूप से शक्तिशाली मनुष्यों का अस्त्र है, यह शारीरिक और नैतिक रूप से शक्तिशाली मनुष्यों का अस्त्र भी है मगर यह कदापि उन मनुष्यों का अस्त्र नहीं है जो नैतिक रूप से कमजोर है। एक सत्याग्रही ही अपने प्रतिद्वन्द्वी से आध्यात्मिक संबंध स्थापित कर लेता है। वह उसमें ऐसा विश्वास उत्पन्न कर देता है कि वह बिना अपने को नुकसान पहुंचाये उसको नुकसान नहीं पहुंचा सकता है।

सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में अन्तर

अनेक बार सत्याग्रह को निष्क्रिय प्रतिरोध का ही पर्यायवाची समझ लिया जाता है, किन्तु गांधीजी ने सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में कुछ अन्तर बताने का प्रयास किया है; हालांकि दोनों ही अस्त्र शत्रु के अत्याचारों का मुकाबला करने, संघर्ष को सुलझाने तथा सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। मूलतः दोनों में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि सत्याग्रह व्यापक रूप में प्रयोग किया जाने वाला अस्त्र है।

और निष्क्रिय प्रतिरोध उसका एक अंग मात्र है। सत्याग्रह अहिंसा का सकारात्मक स्वरूप है तो निष्क्रिय प्रतिरोध उसका नकारात्मक स्वरूप। इन दोनों में निम्नलिखित अंतर है :-

(1) सत्याग्रह नैतिकता का वह अस्त्र है, जिसका आत्म-शक्ति द्वारा संचालन किया जाता है। निष्क्रिय प्रतिरोध राजनैतिक परिवर्तन लाने को ~~लिए किया~~ किया जाता है।

(2) सत्याग्रह द्वारा शत्रु का हृदय परिवर्तन किया जाता है, वह शत्रु को प्रेम से जीतता है। निष्क्रिय प्रतिरोध शत्रु को अशक्त बनाकर अपना उद्देश्य पूरा करता है।

(3) सत्याग्रह पूर्णतः अहिंसात्मक है, जबकि निष्क्रिय प्रतिरोध में समय पड़ने पर हिंसा का भी प्रयोग किया जाता है।

(4) सत्याग्रह आत्मशुद्धि पर बल देता है और इसका प्रयोग सर्वत्र किया जा सकता है, जबकि निष्क्रिय प्रतिरोध में शरीर की आंतरिक शुद्धि जैसी कोई भावना रहती और इसका प्रयोग सीमित क्षेत्र में किया जाता है।

सत्याग्रही के गुण

गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रही में कुछ विशेष गुण होने चाहिए उनके अनुसार सत्याग्रही मन कर्म और वाणी से सत्य और अहिंसा में विश्वास रखने वाले हो। वे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छल-कपट, झूठ, हिंसा इत्यादि का आश्रय नहीं ले। गाँधी जी ने "हिन्द-स्वराज" में सत्याग्रही के लिए व्रतों का पालन करना आवश्यक बतलाया है। ये व्रत निम्नलिखित है - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम, अस्वाद निर्भयता सभी धर्मों के प्रति ~~सम्मान~~ समान दृष्टि रखना, स्वदेशी की भावना रखना तथा अस्पृश्यता निवारण आदि।

सत्याग्रह के विभिन्न रूप

गाँधीजी के अनुसार सत्याग्रह का यह शस्त्र विभिन्न परिस्थितियों में अलग अलग रूप में ग्रहण किया जाता है :

(1) असहयोग आन्दोलन (Non-Cooperation Movement)

असहयोग आन्दोलन अहिंसात्मक सत्याग्रह का एक शक्तिशाली अंग है। इसके पीछे विरोधी से असहयोग करके उसकी शक्ति क्षीण करने की भावना रहती है। इस अस्त्र का प्रयोग निजी और सार्वजनिक दोनों जीवन में किया जा सकता है। गाँधीजी ने भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध इसी अस्त्र का प्रयोग किया था।

असहयोग आन्दोलन के विभिन्न रूप इस प्रकार से है:
(a) हड़ताल (b) बहिष्कार (c) धरना।

(a) हड़ताल - यह भी सत्याग्रह का रूप है इसमे काम बंद कर दिया जाता है। अथवा रोक दिया जाता है। हड़ताल को प्रभावशाली होने के लिए दो बातों पर बल देना चाहिए (i) हड़ताल हमेशा नहीं होना चाहिए (ii) इसे ऐच्छिक होना चाहिए तथा इसमे हिंसा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। कामगारो अथवा मजदूरो का हथियार है।

(b) बहिष्कार - इसका प्रयोग भी सत्याग्रह के अस्त्र के रूप में किया जाता है। उन सभी लोगों का अथवा चीजों का बहिष्कार होना चाहिए जो जनता की सुख - सुविधा के विरूद्ध हो। लोकमान्य तिलक ने ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध विदेशी माल के बहिष्कार के रुप मे इसका प्रयोग किया था।

(c) धरना - गाँधीजी ने 1920-22 तथा 1930-34 में इस अस्त्र का उपयोग मादक द्रव्यों, शराब, अफीम तथा विदेशी वस्त्रों आदि के दुकानों के लिए किया। उनका उद्देश्य इन वस्तुओं के विरूद्ध जनमत तैयार करना था।

(2) सविनय अवज्ञा (Civil Disobedience) यह असहयोग का अंतिम रूप होता है। सविनय अवज्ञा रक्तहीन क्रांति का दूसरा नाम है। इसका प्रयोग कानून विशेष के के विरोध मे अथवा सम्पूर्ण शासन के विरोध मे किया जाता है। गाँधीजी ने इसका प्रयोग चम्पारण मे नील की खेती करनेवाले किसानों के सहायतार्थ नील के विदेशी ठेकेदारों के विरूद्ध किया। तथा उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रजिस्ट्रेशन एक्ट एवं उँगलियों की छाप के विरोध मे किया।

(3) हिजरत - हिजरत मे आन्दोलनकर्ता अपनी स्वेच्छा से अपने निवास स्थान को त्याग करके अन्य स्थान पर जाकर निवास करते है। गाँधीजी ने बरदोली, लिंबडी, जूनागढ़, तथा विट्ठलगढ़ के निवासियों तथा 1935 में कविथा के हरिजनों को उच्चवर्गीय हिन्दुओं के त्रास से मुक्त होने के लिए अपना स्थान छोड़ने की सलाह दी।

(4) अनशन - यह सत्याग्रह का सबसे शक्तिशाली रूप है गांधीजी इसे 'आग्नेय अस्त्र' कहते हैं। अनशन के द्वारा सत्याग्रही स्वयं पर कष्ट झेलकर शत्रु के हृदय का परिवर्तन की कोशिश करता है। गाँधीजी द्वारा चौरी - चौरा मे दुर्घटना के बाद फरवरी 1922 में 5 दिनों का अनशन किया।

सत्याग्रही को प्राय: गाँधीजी के अनुसार पाँच अवस्थाओं से गुजरना होता है - सर्वप्रथम उसे जनता की उदासीनता सहनी पड़ती है, दूसरा उसे जनता का उपहास पात्र बनना पड़ता है। तीसरा, सत्याग्रही के कार्यों से जिन्हें हानि पहुँचती है, वे उसकी निन्दा करते हैं। (4) चौथा, सत्याग्रही को अधिकारी वर्ग का दमन सहना पड़ता है। पाँचवा, सत्याग्रह के सफल होने पर सत्याग्रही को विजय एवं आदर दोनों की प्राप्ति होती है। इसप्रकार, सत्याग्रही में अदम्य साहस, धैर्य, तथा पवित्रता का होना आवश्यक है।

मूल्यांकन

गाँधीजी के सत्याग्रह की कई लोगों ने प्रशंसा की, वहीं कुछ लोगों ने इसकी आलोचना भी की है :

(1) आलोचकों के अनुसार सत्याग्रह से उन व्यक्तियों को निश्चित रूप से मानसिक और अनेक बार शारीरिक कष्ट भी पहुँचता है जिसके विरुद्ध इसका व्यवहार किया जाता है। अत: आचार्य कृपलानी ने इसे "मानसिक हिंसा" (Mental violence) कहा है। आलोचकों द्वारा सत्याग्रह के एक रूप 'उपवास' को आतंकवाद और राजनीतिक दबाव की संज्ञा (Political Blackmail) की संज्ञा दी गई अत: सत्याग्रह अहिंसा की धारणा से अनुकूल नहीं है।

(2) आलोचकों का कहना है कि निरंकुश शासन के विरुद्ध तथा नैतिक और बौद्धिक रूप से पिछड़े हुए लोगों के विरुद्ध सत्याग्रह की सफलता में संदेह है।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में युद्ध या प्रमाणु आक्रमण के क्षेत्रों में सत्याग्रह का प्रयोग हास्यपद प्रतीत होता है।

(5) साम्यवादी, अराजकतावादी तथा अन्य क्रांतिकारी विचारधारावाले व्यक्ति गाँधीवादी सत्याग्रह की आलोचना करते हुए कहते हैं कि इसके द्वारा सामाजिक और आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन नहीं लाया जा सकता।

(6) विविध क्षेत्रों में क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु सत्याग्रह करना सत्याग्रह के नाम का दुरुपयोग करना है। कभी-कभी सत्याग्रह के नाम पर दुराग्रह होता है।

निष्कर्ष -> सत्याग्रह, गांधीजी द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक राजनीतिक अस्त्र है जिसे गांधीजी ने समय - समय पर राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने हेतु किया। सत्याग्रह सत्य की शक्ति, प्रेम की शक्ति अथवा आत्मिक शक्ति का ही दूसरा नाम है। अपने विरोधियों को दुःखी करने के बजाए स्वयं अपने पर दुःख डालकर सत्य की विजय ~~प्राप्~~ प्राप्त करना ही सत्याग्रह है।

अतः हम कह सकते हैं कि सत्याग्रह का औचित्य - अनौचित्य या श्रेष्ठता - निम्नता इस बात पर निर्भर करती है कि उसका प्रयोग किस प्रकार के व्यक्तियों द्वारा हो रहा है। वास्तव में, दोष सत्याग्रह में नहीं, वरन् सत्याग्रह के उपयोग करने वाले व्यक्तियों में है। स्वयं गाँधी जी ने सत्याग्रह के नियम और सत्याग्रह का उल्लेख करते हुए कहा है कि, "यदि उनका पालन किया जाय तो सत्याग्रह निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ नैतिक अहिंसक और प्रभावशाली अस्त्र है।